



SHRI S. RAMAKRISHNAN

Shri S. Ramakrishnan is the Founder President of Amar Seva Sangam, a non-profit service organization in Ayikudy, a small hamlet in Tenkasi District of Tamil Nadu. Shri Ramakrishnan, a quadriplegic and a wheelchair user, is an acclaimed social worker, who made 'Amar Seva Sangam', a safe refuge for the differently able persons in South Tamil Nadu.

2. Born on 6th May, 1954, Shri S. Ramakrishnan studied up to the fourth year of Engineering in Government College of Technology, Coimbatore, before which he did his Pre University Course at Sri Paramakalyani College, Alwarkurichi and schooling at Government Schools, Ayikudy. His ambition was to serve the Indian Navy. He appeared for the Naval Officers Selection Interview under University Entry Scheme at Bangalore. While doing the interview he had to undergo obstacles test for fitness. As fate would have it, he fell down during the test and suffered multiple spine injuries which resulted in complete paralysis below the neck. This accident occurred on 10-01-1975. Since then, he has been confined to the wheelchair. However, in spite of this severe setback to a budding career, Shri Ramakrishnan did not lose his courage and enthusiasm. Shri Ramakrishnan, after overcoming the initial feelings of helplessness and self-pity, resolved to do something concrete and really useful to the under-privileged section of the society in his area.

3. At the young age of 21, during the International Year for the Disabled, Shri Ramakrishnan established, 'Amar Seva Sangam' in June 1981. This Institution is named after his mentor/doctor, Dr. Amarjit Singh Chahal (retired as Air Marshal), who treated him both at Bangalore and at Kirkee. He started a nursery school, namely Sivasaraswathi Vidyalaya, in Ayikudy, with just five rural poor children, which has now grown up to Higher Secondary level with a students' strength of over 750. In 1992, another wheelchair person, Shri S. Sankara Raman, a Gold Medalist Chartered Accountant, diagnosed with Muscular Dystrophy, joined him to make the activities of the Sangam more professional and far reaching. Their mission is to empower the disabled citizens by establishing a 'Valley for the Disabled' as a Rehabilitation and Development Centre for the region and developing models for self-help initiatives by integrating the disabled individuals with the society for improved living conditions in the village. Amar Seva Sangam which made a modest beginning under a thatched roof, has grown multi-fold into a 33 acre Campus comprising of about 35 buildings to accommodate as many individual and independent Disability Management services, with the help of about 450 dedicated staff members, the Sangam runs a Home for the physically challenged, a Day Care Centre, an Early Intervention Centre, a Caliper Making Unit, a full-fledged Medical Testing Unit, a Post-Acute Care centre for the Spinal Injured, a Vocational Training Centre which consists of more than ten trades, besides the inclusive Higher Secondary School. It has set up campus based as well as village based rehabilitation initiatives by which more than 15,000 differently able persons get direct benefits every year in over 800 villages in the districts of Tenkasi, Tirunelveli, and Tuticorin.

4. Amar Seva Sangam has introduced several bold and innovative programs aimed at rehabilitation, education, skill development, vocational training and employment of the differently able. One of their current flagship programs viz., Early Intervention for Children with Developmental Delays is a resounding success which is being gradually scaled up at the state level. Thousands of targeted children with disabilities will benefit from this program.

5. Several honors and awards have been conferred on Shri S. Ramakrishnan nationally and globally by Rotaries, Lions, Jaycees, NGOs, Religious Agencies and the Media, besides being the recipient of many meritorious awards, including from the Presidents of India and from the Prime Minister of India. He has also been nominated as a member in the Welfare Board of Disabled by the Tamil Nadu Government.





श्री एस. रामकृष्णन

श्री एस.रामकृष्णन तमिलनाडु के तेनकाशी जिले के एक छोटे से कस्बे आइकुडी में एक गैर लाभकारी सेवा संगठन 'अमर सेवा संगम' के अध्यक्ष हैं। श्री एस.रामकृष्णन की गर्दन के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त है और वह व्हीलचेयर का प्रयोग करते हैं। वह एक ख्यातिप्राप्त सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होने अमर सेवा संगम को दक्षिण तमिलनाडु में दिव्यांगजनों के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल बना दिया है।

2. श्री एस.रामकृष्णन का जन्म 6 मई, 1954को हुआ। उन्होने गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ टेक्नोलोजी, कोयंबटूर में इंजीनियरिंग के चौथे वर्ष तक अध्ययन किया। उससे पहले उन्होने श्री परमकल्याणी महाविद्यालय, अलवारकुरिची से प्री–यूनिवर्सिटी पाठ्यक्रम और सरकारी स्कूल, आइकुडी से स्कूली शिक्षा प्राप्त की। उनकी उत्कट अभिलाषा भारतीय नौसेना में सेवा करने की थी। वे बेंगलुरु में नौसेना अधिकारियों के चयन साक्षात्कार की विश्वविद्यालय स्तरीय प्रवेश परीक्षा में शामिल हुए। साक्षात्कार में उन्हें फिटनेस की बाधा परीक्षा से गुजरना था। दुर्भाग्यवश परीक्षा के दौरान गिरने के कारण उनकी रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट लग गई और उनके गर्दन के नीचे का हिस्सा पक्षाघात का शिकार हो गया। यह दुर्घटना 10.01.1975 को हुई थी। तभी से उनकी जिंदगी व्हीलचेयर तक सिमटकर रह गई। अपने सुनहरे भविष्य की राह में आई ऐसी विकट बाधा के बावजूद, श्री रामकृष्णन की हिम्मत और जोश में कोई कमी नहीं आई। बेबसी और मायूसी की भावना से उबरते हुए, श्री रामकृष्णन ने अपने क्षेत्र में समाज के वंचित वर्ग के लिए कुछ ठोस और उपयोगी काम करने का संकल्प लिया।

3. अंतरराष्ट्रीय विकलांगजन वर्ष के दौरान, 21 वर्ष की अल्पायु में श्री रामकृष्णन ने जून,1981 में 'अमर सेवा संगम' की स्थापना की। यह संस्थान उनके परामर्शदाता/चिकित्सक, डॉ. अमरजीत सिंह चहल (एयर मार्शल के पद से सेवानिवृत्त) के नाम पर है, जिन्होंने बेंगलुरु और किर्की में उनका इलाज किया था। उन्होंने पांच ग्रामीण गरीब लड़कों के साथ आइकुडी में शिवसरस्वती विद्यालय के नाम से एक नर्सरी स्कूल शुरू किया जो अब 750 से अधिक विद्यार्थियों वाला एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन चुका है। 1992 में, व्हीलचेयर प्रयोग करने वाले एक अन्य व्यक्ति और स्वर्ण पदक प्राप्त चार्टर्ड अकाउंटेंट, श्री एस. शंकर रमण संगम के कार्यों को अधिक सुचारू बनाने और उसके विस्तार के लिए उनके साथ आ मिले। श्री एस. शंकर रमण, मस्कुलर डिस्ट्रोफी से पीड़ित थे। उनका मिशन इस क्षेत्र के लिए एक पुनर्वास और विकास केन्द्र के रूप में 'वैली फॉर द डिस्ऐबल्ड' स्थापित करना तथा स्वयं सहायता पहल करके और दिव्यांगजनों को समाज के साथ जोड़कर उनके जीवन को बेहतर और सशक्त बनाना है। एक झोपड़ी से मामूली शुरुआत करते हुए, अमर सेवा संगम अब कई गुना बढ़कर 33 एकड़ में लगभग 35 भवनों वाला एक बहु–आयामी परिसर बन गया है। इसमें 450 कर्मठ कर्मचारियों की सहायता से व्यक्तिगत और स्वतंत्र दिव्यांगता प्रबंधन सेवाएं मौजूद हैं। यह संगम एक समावेशी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अलावा, दिव्यांगजनों के लिए एक गृह, डे–केयर सेंटर, अर्ली इंटरवेंशन सेंटर, कैलीपर निर्माण यूनिट, एक पूर्ण सुविधायुक्त चिकित्सा जांच इकाई, रीढ़ की चोट के मरीजों के लिए एक पोस्ट–एक्यूट केयर सेंटर, एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, जिसमें दस से अधिक विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है, चला रहा है। इसने परिसर में और गॉव में पुनर्वास केन्द्र स्थापित किए हैं जिनके द्वारा तेनकाशी, तिरुनेलवल्ली और तूतीकोरिन के जिलों के 800 से अधिक गॉवों में प्रति वर्ष 15 हजार से अधिक दिव्यांगजनों को सीधा लाभ प्रदान किया जाता है।

4. अमर सेवा संगम ने दिव्यांगजनों के पुनर्वास, शिक्षा, कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोजगार के उद्देश्य से कई साहसिक और मौलिक कार्यक्रम शुरू किए हैं। उनके प्रमुख कार्यक्रमों में से एक अर्ली इंटरवेंशन फॉर चिल्ड्रेन विद डेवलपमेंटल डिलेज एक बेहद सफल कार्यक्रम है, जिसे अब राज्य स्तर पर लागू किया जा रहा है। हजारों दिव्यांग बच्चे इस कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे।

5. श्री एस.रामकृष्णन को भारत के राष्ट्रपति और भारत के प्रधानमंत्री से प्राप्त पुरस्कारों सहित, रोटरी क्लब, लायंस क्लब, जेसी क्लब, गैर–सरकारी संगठनों, धार्मिक संस्थाओं और मीडिया से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें तमिलनाडु सरकार द्वारा दिव्यांग कल्याण बोर्ड का सदस्य भी नामित किया गया है।